**Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)**

*https://www.talentpublication.info/ Issue:2/Volume: 1/2024 ISSN:2583-9985*

# संघर्ष से शिखर तक

Jyoti Kiran
Email: jyoti.kiran.anvi@gmail.com

यह कहानी सिर्फ एक कहानी नहीं है, यह उस माँ के धड़कते हुए दिल की, उसकी अटकी हुई साँसों की, बच्चों के लिए झेल रही दास्तां की असली कहानी है। वो माँ, जिसकी पूरी दुनिया बस उसके दो बच्चों के चारों तरफ घूमती है। उसकी हर सुबह, हर शाम, हर साँस और खाने का हर निवाला, झिलमिलाती डिबिया की लौ की तरह, चिंतित माँ की दर्द भरी आह को अपने बच्चे के लिए मुसकुराकर ऐसे बिताती है, जैसे उसकी रानी बिटिया और बेटा राजकुमार माँ के लिए आज ही महल सजाने वाले हों। और उस बेटी की बात करूँ तो... उसने माँ की आँखों में झाँककर अपना बचपन कहीं छोड़ ही दिया। बेटा? वो तो जब से छोटा सा था, उसकी नन्ही उँगलियों ने बोझ उठा लिया, जिसे बड़े-बड़े लोग देखकर घबराते हैं।

बचपन का बोझ और माँ की चिंता

गाँव? ओह! गाँव तो बस नाम का था। असल में तो कब्रगाह था - यहाँ हर सपना ज़मीन में दबा मिलता, धूल और चुप्पियों के बीच। छोटे-छोटे बच्चे खेलते थे, पर उनकी आँखों में डर और भूख की गूंज थी। उसी गाँव की थी रमा देवी। उसकी ज़िंदगी का एक ही मिशन - अपने दोनों बच्चों, रुनझुन और रामू को गरीबी और अंधेरे से खींचकर बाहर निकालना। हाथों में लकीरें नहीं थीं, लेकिन छाले? वो खुद कहानी कहते थे। सूरज उगते ही काम पर निकल जाती, और जब पूरा गाँव सो जाता, तब घर लौटती। कमर में दर्द तो था, मगर उसके दिल में पलते सपनों के सामने वो कुछ भी नहीं था।

घर का अंधेरा

अब घर की कहानी सुनो - वहाँ भी एक अलग ही तमाशा चलता था। पति साहब, जो कभी साथी थे, अब शराबी बन चुके थे और वो भी इसलिए क्योंकि घर तो छोड़ो, सभी के लिए खाना तक नहीं जुटा पा रहे थे। एक शाम पूरे सुरूर में घर आए, खाना देखा और भड़क गए। थाली उठाई, ज़मीन पर दे मारी - दाल सारा फर्श चाट रहा था। चुप्पियों के बीच अचानक खटखट, ज़मीन पर गिरती थाली की खनक, रमा की रूह काँप उठी... बच्चों ने माँ की छाया में खुद को छुपाया। रमा देवी चुप रही, बच्चों को अपने पास खींच लिया।

रामू काँप रहा था। जब तूफान थमा, रुनझुन की छोटी उँगलियाँ काँप रही थीं, आँखों में डर और सवाल के आँसू - "माँ, ये रोज़ क्यों होता है? हम कब तक डर के साए में जीएंगे?"

रमा देवी ने अपने होंठ कस लिए और धीरे-धीरे बच्चों को अपने आँचल में खींचा, जैसे अपनी सुरक्षा का आख़िरी किला उनके लिए बना रही हो। रुनझुन की आँखें भीगी थीं। बोली, "रो मत मेरी रानी, ये अंधेरा हमेशा नहीं रहेगा। एक दिन तुम और रामू पढ़-लिखकर बड़े आदमी बनकर यहाँ से बहुत दूर निकलोगे। तुम्हारी पढ़ाई ही मेरी ज़िंदगी है।"

बच्चों का संघर्ष और ज़िम्मेदारी

समय जैसे-तैसे आगे निकलता गया। रुनझुन बड़ी हो रही थी। एक दिन माँ की आँखों में झाँका... दर्द और थकान के सिवा कुछ भी नहीं था। उसी दिन मन में ठान लिया - माँ अब अकेले नहीं रोएगी। उसने मोहल्ले के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। पहली कमाई - पाँच सौ रुपए - माँ की हथेली में रखे। "माँ, ये मेरी पहली कमाई है।" आवाज़ काँप रही थी। रमा ने पैसे लेने के बजाय उसका हाथ अपने दिल से लगा लिया - "ये तेरी मेहनत की खुशबू है बेटी, आँख में आँसू, काँपती आवाज़ में...

हाँ... ये मेरी कमाई है।" उस रात दोनों माँ-बेटी बहुत देर तक एक-दूसरे को देखती रहीं।

रामू भी कहाँ पीछे रहने वाला था। बहन और माँ को संघर्ष करते देखकर लिपटकर रोने लगा और उसका भी दिल भर आया। स्कूल के बाद उसने रिक्शा खींचना शुरू कर दिया। एक शाम लौटा, पैरों में छाले, पूरा थका हुआ। रमा ने उसका हाथ पकड़ा और बोली, "बेटा, इतना क्यों थका रहा है खुद को?"

रामू ने रमा के हाथों में अपने हाथ रखे, जो उसके पैरों से भी ज़्यादा खुरदुरे थे। और बंद मुट्ठी में डेढ़ सौ रुपए थे। माँ की आँखों में खुशी के आँसू थे - अब मेरा बेटा बड़ा हो गया है। "माँ, जब मैं आपके हाथ देखता हूँ, लगता है जैसे दुनिया की सारी ठोकरें और दर्द छुप गए हों। बस चाहता हूँ कि आप चैन से रहें।"

बीमार माँ और बच्चों की हिम्मत

फिर वही हुआ जिसका डर था। लगातार मेहनत और भूख ने रमा देवी को बिस्तर पकड़वा दिया। उसकी आँखें पूरी तरह थक चुकी थीं। रुनझुन और रामू उसके पास बैठे रो रहे थे। "माँ," रुनझुन ने उसका हाथ पकड़कर कहा, "आप ठीक हो जाओ। जो चाहिए बताओ, हम सब ला देंगे।"

रमा की आँखों से आँसू बहने लगे। "मेरी जान, तुम लोग हो न, यही मेरे लिए सब कुछ है।" उसकी आवाज़ बहुत धीमी थी। अगले दिन, जब उन्हें कहीं से मदद नहीं मिली, तो रामू ने रुनझुन से कहा, "दीदी, हमें अपनी माँ को बचाना है, चाहे कुछ भी करना पड़े।" उस दिन उन्होंने पहली बार हाथ फैलाए। हर फैलता हाथ, उनका आत्मसम्मान साथ लेता गया।

जैसे यह सब कम था, जमींदार ने उन्हें घर से निकाल दिया। "अब तुम्हारा बाप काम नहीं करता, जाओ यहाँ से।" सामान सड़क पर था। रमा देवी ने खाली नज़र से झोपड़ी को देखा। रमा देवी की आँखों से आँसू बह रहे थे, लेकिन बच्चों की आँखों में संकल्प और उम्मीद की आग जल रही थी। हर थकान की लकीर, हर दर्द का निशान उनकी मेहनत की दास्तान गा रहा था।

रामू - एक छोटा बच्चा - ने माँ के कंधे पर हाथ रखा। "माँ, हम उस जगह पर एक और झोपड़ी बना लेंगे, जहाँ पर मरे जानवर फेंकते हैं। वहाँ से हमें कोई नहीं भगाएगा... है न माँ?"

लेकिन रमा का दिल टूट चुका था। "मुझे माफ कर दो बच्चों। मैं तुम्हें छत भी नहीं दे पाई।" रमा के मुँह से ये शब्द निकले और वह वहीं बैठ गई। रुनझुन ने उसे उठाया। "नहीं माँ," रुनझुन ने कहा, "छत तो कहीं भी बन जाएगी। हमारी छत तो आप हो। जहाँ आप हो, वही हमारा घर है।"

बाज़ार, मंदिर, हर जगह घूमा। कई रात सोए नहीं, कई रात खाना नसीब नहीं हुआ... और पैसे इकट्ठे हुए और माँ को उन दोनों ने मिलकर बचा लिया। बच्चों के प्यार ने रमा को फिर जीने की वजह दी। दुआएँ और दवाइयाँ रंग लाईं, धीरे-धीरे रमा ठीक होने लगी। खेतों में काम नहीं कर सकती

थी। अब रमा देवी बूढ़ी हो चुकी थी, हाथ-पैर जवाब दे रहे थे... पर हार कहाँ मानी। अब घरों में बर्तन माँजना, झाड़ू लगाना - वही हाथ, बस काम बदल गया। लेकिन ये सिर्फ काम नहीं था, ये तो ज़िंदगी की जंग थी।

सपनों की उड़ान और क्रांति की मशाल

समय की चाल देखो - मेहनत रंग लाई। रुनझुन और रामू ने पढ़ाई नहीं छोड़ी, चाहे उनके दोस्तों ने हजारों ताने दिए... उन्हें भिखमंगा कहकर भी बहुत चिढ़ाया, लेकिन वे लोग टूटे नहीं। उनके हर आँसू, हर रात, उनका रास्ता रोशन करती रही। बहुत बार परीक्षा देने के बाद अंततः सफल हुए और फिर आया वो पल - रुनझुन IAS बन गई। गाँव में दिवाली जैसा जश्न। किसी के फोन से खबर आई, रमा ज़मीन पर बैठ गई - "मेरी रुनझुन रानी बन गई।" फिर रामू, मेरा बेटा राजा... IPS बन गया।

जब दोनों वर्दी में माँ के पास पहुँचे, उनके चेहरे पर माँ के संघर्ष की चमक थी, घमंड नहीं। रामू बोला, "माँ, मैं आज जो कुछ हूँ, आपकी वजह से हूँ।" रुनझुन ने माँ के पैर छुए - "माँ, आपने अंततः मुझे रानी बना ही दिया। देखो, मैं एक आईएएस अधिकारी बन गई हूँ।" रमा ने दोनों को गले से लगा लिया। इस बार आँसू सिर्फ खुशी के थे, जो उसकी आँखों से बहकर उसकी हर परेशानी को धो रहे थे।

आज सड़ी नाली की बदबूदार, टपकती टूटी झोंपड़ी महल लग रही थी... पत्रकारों और बड़े-बड़े अधिकारियों की गाड़ियों की लाइन लगी थी। जमींदार भी हाथ जोड़े खड़ा था। उसका जबरन कब्ज़ाया हुआ ज़मीन शायद हाथों से जाने का डर था...।

दोनों भाई-बहनों ने गाँव की औरतों के लिए एक अभियान शुरू किया। उन्हें पता था - औरतों का दर्द वही समझ सकता है जिसने वो झेला हो। उन्होंने गाँव में जाकर सभाएँ कीं। शुरुआत में महिलाएँ डरती थीं, वे अपनी बात नहीं कहती थीं। पर जब रुनझुन ने अपनी और अपनी माँ की कहानी सुनाई, तो एक-एक करके हर महिला ने अपनी कहानी बताई। किसी के पति शराबी थे, कोई पैसे के लिए शोषण सह रही थी, तो कोई अपनी बेटी के लिए चिंतित थी। रुनझुन ने उनके हाथ पकड़े और कहा - "आप अकेली नहीं हो, मैं आपकी बहन हूँ।"

आज रुनझुन और रामू सिर्फ अफसर नहीं हैं, वे उन लाखों बेबस और पीड़ित महिलाओं के लिए उम्मीद की किरण बन गए हैं। उन्होंने एक ऐसा आंदोलन शुरू किया जो सिर्फ कानून से नहीं, बल्कि दिलों और मानसिक बदलाव का आगाज़ था। उनकी कहानी बताती है कि दर्द और आँसू भी कभी-कभी एक मज़बूत इमारत की नींव बन सकते हैं, अगर हिम्मत न हारो। और एक

जन्मदाता का प्यार दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है - उन्हें आँसू मत आने दो।

यह कहानी हमें सिखाती है कि चाहे कितनी भी परेशानियाँ क्यों न हों, अगर हम हिम्मत न हारें और मेहनत करते रहें, तो सफलता ज़रूर मिलती है। साथ ही, यह समाज में महिलाओं के प्रति सोच बदलने और उनके सशक्तिकरण की ज़रूरत पर भी ज़ोर देती है।